शोध मंथन
हिन्दी जर्नल (पत्रिका)

शोध मंथन में समाज, साहित्य, कला, राजनीति, अर्थ, मनोविज्ञान, गृहविज्ञान, पुस्तकालयविज्ञान, पत्रकारिता शिक्षा, कानून, इतिहास, दर्शन, महिला शिक्षा, महिला जगत, पुरूष, बाल जगत आदि के जुड़े विषय पर उत्कृष्ट, मौलिक, तरूष्परक, वैज्ञानिक पद्धति से युक्त व प्रासंगिक उच्च्स्तरीय शोधपत्रों को प्रकाशित किया जाता है।

सम्पादक:
ले0 डा0 अन्जुला राजवंशी, आर0 जी0 पीजी कालिज, मेरठ
सह–सम्पादक:
डा0 अर्पणा वत्स, आर0 जी0 पीजी कालिज, मेरठ
डा0 सुनीता बडोला, एच0एन0ब0, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर
डा0 सुशीला शक्तावत, गुरू नानक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उदयपुर, राज0
श्रीमति सी0 आर0 राजश्री, कोयमबटूर, तमिलनाडु
डा0 विनोद कालरा, कन्या महाविशलय, जालन्धर

- शोध मंथन स्ववित्तपोषित तथा सहयोग राशि से प्रकाशित किया जाता है।
- जर्नल अनु बुक्स के नाम डिमाण्ड शोध पत्र के साथ ही भेजना सुनिश्चित करें।
- शोध पत्र प्रकाशित होने पर आपको शोध मंथन की दो प्रतियां प्रदान की जायेगी। परन्तु अन्य अंक या विशेषांक मंगवाने के लिए $60 या 500 रू0 प्रकाशक को भेजने होंगे।
- शोध मंथन में पूर्व प्रकाशित लेख व पत्र प्रकाशित नहीं किये जाते।
- शोध मंथन में प्रकाशन हेतु दूसरे के शोध पत्र न दिये जाये।
- शोध मंथन के प्रबन्ध सम्पादक पूर्व निर्धारित हैं। यथा समय अतिथि सम्पादक चयनित किये जाते हैं।
- प्रकाशित सामग्री का कापी राइट जर्नल अनु बुक्स, मेरठ का है।
- अपना शोध पत्र प्रकाशित करवाने के लिये ई–मेल या सीडी के द्वारा अपने पूर्ण पते के साथ भेजे।
- प्रबन्ध सम्पादक का निर्णय अन्तिम होगा।

जर्नल अनु बुक्स
शिवाजी मार्ग, निकट पैट्रोल पम्प
मेरठ शहर–भारत
फोन न0 919997847837

PRINT ISSN: 0976-5255

शोध मंथन
हिन्दी जर्नल (पत्रिका)

Vol. 6 No. 1 **March 2015**

सम्पादक:
ले0 डा0 अन्जुला राजवंशी
आर0जी0 पीजी कालिज, मेरठ

जर्नल अनु बुक्स
शिवाजी मार्ग, निकट पैट्रोल पम्प
मेरठ शहर–भारत
Available at: *http://shodhmanthan.anubooks.com/*

अनुक्रमणिका

1. आर्थिक विकास में कृषि क्षेत्र का योगदान 1
डा0 अर्चना मिश्रा

2. उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के वकास में केन्द्रीय विद्यालय व राज्य सरकारी विद्यालयों की भूमिका 7
डा0 अल्का खन्ना

3. नागार्जुन के उपन्यासों में मार्क्सवादी दृष्टि 17
डॉ० रामयज्ञ मौर्य

4. उत्तराखण्ड के सीमान्त जनपद पिथौडागढ़ का एक ऐतिहासिक परिचय 23
डा0 शिल्पी श्रीवास्तव

5. वैदिक एवं बौद्ध कालीन नारी शिक्षा 45
कविता रानी गहलौत/डा0 रविकान्त सरल

6. संत शिरोमणि– रविदास 56
सौरभ कुमार

7. संत कबीरदारः साहित्यिक परिचय एवं दार्शनिक सिद्धान्त 63
डा0 शिल्पी श्रीवास्तव

8. चौदह फेरे उपन्यास में सामाजिक चेतना 84
सोनदीप

9. अनुसूचित जाति की महिलाओं में महिला सशक्तिकरण का समाजशास्त्रीय अध्ययनः मेरठ जिलमें में माछरा विकास खण्ड के विशेष संदर्भ में 92
डा0 संगीता गुप्ता/सुशील लवानिया

10. दलित – एक परिचय 105
डा0 दिनेश कुमार

11. मेवाड़ प्रजामण्डल आन्दोलन में साप्ताहिक नवजीवन का योगदान 108
डा0 सुशीला शक्तावत

12. असम के कृष्ण भक्त कवि श्री देव माधव द्वारा विरचित बरगीत के विषय–वस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन 132
जयन्त कुमार बोरो

13. राजभाषाः एक विश्लेषण 162
डा0 मौ0 माजिद मिया

14. भारतीय संस्कृति 178
डॉ0 अजुंला राजवंशी

15. वैश्विक परिदृश्य में स्वामी विवेकानन्दः राष्ट्रवादी चिन्तन एवं दर्शन 185
डॉ0 (श्रीमति) विनोद कालरा

16. भारतीय कला, धर्म और संस्कृति के पारस्परिक संबंधों का विवेचनात्मक अध्ययन 191
डॉ0 रीता सिंह

17. जनजातिय समाज और समस्याएं 196
संजीव कुमार मांजरे
संतोष कुमार बंजारे

18. मोहन राकेश का साहित्यिक चिन्तनः नाटक के संदर्भ में भूमिकाः साहित्य और साहित्यिक चिन्तन 209
डॉ0 शीला चन्देल

19. भारत में शिक्षा आयोंगो की अनुशंसाएं एवं कियान्वयन तथा कमजोर वर्ग पर प्रभाव– उच्च शिक्षा के संदर्भ में 218
डॉ0 दत्तात्रय पालीवाल

20. कौशल विकास 228
डॉ0 रतन कुमार

शोध पत्रों में अभिव्यक्त विचारों के लिए सम्पादिका एवं प्रकाशक उत्तरदायी नहीं है।

1 यशपाल के कथा साहित्य का राजनीतिक परिदृश्य

मनीषा पाण्डेय*

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का एक लंबा इतिहास रहा है। इस आंदोलन के प्रारंभ में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना और धीरे–धीरे अंग्रेजों का पूरे भारत में आधिपत्य, जिससे उनका भारतीय जनता पर शोषण, दमन, अत्याचारी नीति का बढ़ता प्रभाव आदि प्रमुख रहे। इसके विरोध में लगभग पूरे भारत में सौ वर्ष तक देश की जनता ने क्षेत्रीय स्तरों पर सशस्त्र विद्रोह किए। एक ओर संसाधनों और समझ के अभाव में वे असफल रहे तो कहीं सफल भी हुए। इसमें 1857 का विद्रोह, नाविक विद्रोह, वहादयों का विद्रोह, जनजातियों, आदिवासियों का विद्रोह का लक्ष्य स्वतंत्रता और स्वराज्य प्राप्त करने की प्रबल आकांक्षा थी और अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शस्त्र उठाना एकमात्र साधन था।

इसी बीच भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में महात्मा गांधी के आगमन से एक नया मोड़ आया जिन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर देश को स्वतंत्र कराने का संकल्प लिया। गांधी जा का यह संकल्प आम जनता ने स्वीकार किया। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, नमक कानून तोड़ना और डांडी कूच इस दृष्टि से सफल जन आंदोलन कहे जा सकते हैं। इसके समान्तर देश के भीतर क्रांतिकारियों का भी आंदोलन जारी रहा। क्रांतिकारी आंदोलन के सदस्य आतंक के बल पर अंग्रेजों को भगाना चाहते थे। उस समय भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव, विस्मिल, यशपाल जैसे महान क्रांतिकारी थे जिनसे अंग्रेजी सरकार भी थर्राती थी।

*शोध छात्रा, एस0 एस0 जे0 परिसर, अल्मोड़ा, उत्तराचंल।

राष्ट्रीय आंदोलन की इस लहर में विभिन्न राजनैतिक पार्टियाँ जैसे कांग्रेस, समाजवादी, साम्यवादी दल, आजाद हिंद फौज आदि अपने –अपने तरीकों से देश को स्वतंत्र कराना चाहते थे। इन राजनैतिक पार्टियों व क्रांतिकारी दलों के आपसी संघर्ष के कारण भी देश में अराजकता का माहौल व्याप्त था। कुछ कांग्रेस कार्यकर्ता गांधीवाद के नाम पर भ्रष्टाचार, अनैतिकता आदि कार्यों में लिप्त थे कुछ पूर्ण राष्ट्रभक्त नेता भी थे जो स्वराज प्राप्ति के लिए अपनी जान हथेली पर लिए घूमते थे।

यशपाल का जन्म भी स्वाधीनता आंदोलन के बीच हुआ था। बचपन से ही राष्ट्रभक्ति ने उन्हें प्रारंभ में गांधीवादी फिर क्रांतिकारी और अंत में साम्यवादी (कम्युनिस्ट) विचारधारा प्रदान की। गांधीवाद के सिद्धांतों को मानते हुए भी यशपाल को लगता था कि यह रास्ता लंबा है और देर से आजादी देगा। अहिंसा और दया धर्म से क्रूर शासकों का हृदय परिवर्तन उनकी समझ में नहीं आया। लाहौर के नेशनल कॉलेज के देश के प्रसिद्ध क्रांतिकारी भगत सिंह, सुखदेव, उनके सहपाठी बने जिनके विचारों ने यशपाल को भी क्रांतिकारी बना दिया। अनेक घटनाओं को अंजाम देने जेल जाने तथा जेल से छूटने के पश्चात उन्होंने क्रांति के मार्ग से अपनी असहमति जताई कि बिना जनता की सहायता के क्रांतकारी अपने उद्देश्य की प्राप्ति नहीं कर सकते। उन्होंने बुलेट छोड़कर बुलेटिन हाथ में लिया अर्थात साहित्य इस प्रकार क्रांतिकारी से कलमकार तक का लंबा सफर पूरा किया।

चूँकि यशपाल स्वयं एक क्रांतिकारी और कम्यूनिस्ट विचारधारा से प्रभावित थे, उन्होंने आजादी से पूर्व राष्ट्र के विभिन्न स्वतंत्रता आंदोलनों, देश की राजनीति विभाजन की त्रासदी और आजादी के बाद की राजनैतिक स्थिति, राजनैतिक आडंबर शासकीय भ्रष्टाचार, आर्थिक संकट को अपनी प्रत्यक्ष देखा एवं झेला था। अतः उनके कथा साहित्य में आजादी से पूर्व और बाद की राजनैतिक स्थिति का प्रत्यक्ष एवं प्रभाशाली चित्रण हुआ है। उनके सरोकारों में जनता सदैव प्रमुख रही और यशपाल ने पूरी शक्ति और संकल्प के

साथ राष्ट्रीय आंदोलन में प्रत्यक्ष सहभागिता की। उनके क्रांतिकारी व्यक्तित्व और कृतित्त्व पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डॉ0 माखनलाल सिंह सिसौदिया ने भी लिखा है कि ''यशपाल ने प्रमुख क्रांतिकारियों की शहादत, फांसी और लंबी सजाओं के फलस्वरूप क्रांतिकारी आंदोलन समाप्त हो जाने पर अपना सशस्त्र क्रांति का मार्ग छोड़कर उसे कलम की क्रांति के मार्ग में बदल दिया था– प्रारंभ में वे पत्रकार के रूप में, बाद में प्रमुख लेखक के रूप में – किंतु ऐसा करने में वे क्रांति के ध्येय या लक्ष्य से रंचमात्र भी विचलित नहीं हुए, उन्होंने केवल अपनी अंगुलियाँ पिस्तौल से हटाकर उसमें मजबूती से कलम पकड़ी ली, लेकिन अपनी वैचारिकता वही रखी। उन्होंने कलम द्वारा क्रांति के ध्येय को और ज्यादा व्यापक बनाते हुए उसे राजनीतिक, आर्थिक परिवर्तन ही नहीं, संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के परिवर्तन के संघर्ष में बदल दिया।''[1]

राजनीति से यशपाल का गहरा संबधं रहा है। उनका मानना था कि हर अच्छे लेखक के लिए न राजनीति से अलग हुआ जा सकता है और न सामाजिक समस्याओं से।''[2] यशपाल ने आजादी से पूर्व और बाद भी राजनति को निकटता से देखा और समझा है। इनकी दृष्टि में तत्कालीन राजनीति चाहे वह कांग्रेसी हो या गांधीवादी, सच्ची राजनीति नहीं थी। अपने कथा साहित्य में यशपल ने युद्धोत्तरकालीन परिस्थितियों से लेकर गांधीवादी राजनैतिक व्यवस्था, कम्यूनिस्टों का आंदोलन, जुलूस, मजदूरों की हड़ताल, मुस्लिम लीग का संघर्ष आदि अनेक गतिविधियों को उजागर किया है। आजादी से पूर्व कांग्रेस देश की जनता के साथ जो बड़े–बड़े वादे करती थी तथा आजादी के बाद उन वादों से मुकरना, राजनैतिक भ्रष्टाचार, शोषण आदि का भी यशपाल के कथा साहित्य में यथार्थ चित्रण हुआ है। इस दृष्टि से यशपाल के 'दादा कामरेड', 'देशद्रोही', 'गीता', 'झूठा सच', 'मनुष्य के रूप', 'मेरी तेरी उसकी बात', उपन्यासों तथा अनेक कहानियों में आजादी से पूर्व व बाद नेताओं का राजनैतिक आडंबर, पुलिस का जनता पर अत्याचार, शासकीय भ्रष्टाचार, नेताओं का अनैतिक आचरण, मजदूरों का संघर्ष

आदि का चित्रण हुआ है। 'दादा कामरेड', 'देशद्रोही', 'पार्टी कामरेड', 'मनुष्य के रूप', 'झूठा सच', तथा 'मेरी तेरी उसकी बात', उपन्यासों में तो विभिन्न राजनैतिक गतिविधियों का यर्थाथ चित्रण हुआ है। 'दादा कामरेड' में लेखक ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में होने वाली क्रांतिकारी संगठनों की गतिविधियों पर प्रकाश डाला है। सन् 1930 से लेकर सन् 1936 तक की गतिविधियों का लेखा जोखा है। 'देशद्रोही' सन् 1942 के भारत की गतिविधियों से प्रभावित है। द्वितीय विश्वयुद्धों में कम्युनिस्टों की अंग्रेज समर्थक नीति के कारण उन्हें देश–द्रोही ठहराया गया था। इस उपन्यास में कम्युनिस्टों से देश–द्रोही के आरोपा को दूर करने का प्रयास किया गया है। 'गीता' उपन्यास सन् 1942 से 1946 तक के काल का चित्रण करता हुआ कम्युनिस्ट कार्यप्रणाली का विस्तार से विवेचन करता है तथा साथ–साथ नौसैनिक विद्रोह के समय के साम्राज्य विरोधी आंदोलन को मूर्त रूप दे जाता है। 'मनुष्य के रूप', सामाजिक विषय का उपन्यास होते हुए भी इसमें राजनैतिक पृष्ठभूमि देकर इस यथार्थ बनाने की कोशिश की गई है। द्वितीय महायुद्ध के समय की अनेक राजनैतिक बातों का इसमे विवरण किया गया है। 'झूठा सच' के प्रथम भाग में स्वतंत्रता से पूर्व की राजनीति अंग्रेजों का दमन, जातीय संगठन एवं देश विभाजन की त्रासदी का यथार्थ चित्रण हुआ है। इसके दूसरे भाग 'देश का भविष्य' में आजादी के बाद देश की राजनैतिक स्थिति, नेताओं का आडंबर जनता में निराशा शासकीय भ्रष्टाचार का यथार्थ चित्रण हुआ है। 'मेरी तेरी उसकी बात' उपन्यास में भी सन् 1919 से 1957 तक की लंबी कालधारा में भारत का स्वाधीनता संग्राम तथा आजादी के बाद की घटनाएँ अभिव्यक्त हुई हैं। यशपाल के उपन्यासों में राजनीतिक पक्ष अत्यधिक प्रबल है, किंतु कहानियों में राजनीति बहुत कम व्यक्त हुई है। इनकी कुछ कहानियों जैसे 'जनसेवक', 'कानून', 'काला आदमी', 'पुलिस की दफा', 'हलाल का टुकड़ा', 'साग', 'जन गण मन अधिनायक जय हे', 'कुल मर्यादा', 'इसी